

१७०० गित्याचन सन्ध्या  
विधि चतुर्थी द्वितीया विधि



श्रीरविवद्राय नमः॥ अथ निर्याचन विधि लिख्यते॥ नासिया॥ क्रीं आत्मरत्नाय  
स्वाहा॥ क्रीं विद्या रत्नाय स्वाहा॥ क्रीं निवर्त्तनाय स्वाहा॥ ॥ अथ सिद्धि कवचं  
नमो हस्तानाम् अक्षयिणीयै नमः॥ क्रीं श्रीं सः श्रीं सूर्यायि हस्तमर्च्य  
गृहाण स्वाहा॥ स्वातन्त्र्यं॥ पूर्य नमः॥ ॥ पुन नमः कावचं स्व नमः पुन कावच  
कस्वान्त रय॥ श्रीं पुन स्थान नमः॥ कर्मदात्र स्वान कावचं स्वय॥ ॥ गण पुन मूल  
नमः स्वान॥ गंगारण्यं अ नमः॥ स्ववस॥ पुन पुन स्थान नमः॥ जवस॥ मूलं श्रीं श्रीं

श्रवणाय दीप दीप किं हि नाय नमः॥ क्रीं स॥ ॥ रुद्र अक्षय रुद्र॥ गाल रुद्रायि  
नमः॥ ॥ प्राणायाम॥ क्रीं १० जवस याव॥ क्रीं १० नयाद ग याव॥ क्रीं २२  
जवस उत॥ ॥ न्यासः॥ रुद्र अक्षय रुद्र॥ क्रीं अक्षय रुद्राय नमः॥ श्रीं नमः श्रीं नीत्या  
स्वाहा॥ रुद्र मध्यायां वषट्॥ रुद्र अनामिकायां हूं॥ रुद्र कनिष्ठायां वीषट्॥ रुद्र कन  
तलपृष्ठायां अक्षय रुद्र॥ ॥ रुद्र हृदयाय नमः॥ श्रीं निवर्त्तनाय स्वाहा॥ रुद्र निखाय  
वषट्॥ रुद्र कवचाय हूं॥ रुद्र ननु रुद्राय वीषट्॥ रुद्र अक्षय रुद्र॥ ॥ रुद्रि न्यासः॥



धवनजवसलंखनयकआयावआसनतय॥ जलयाववहुवआसनायनम॥ अर्घा  
नामंविनांमलावतय॥ लंखवतखानतय॥ पूजा॥ गंगझयेनम॥ हांरुदयायनम  
॥ हांलिनमखाहा॥ हंलिखायेवमट॥ हंरुदवायहं॥ हंनरुदयायवोमट॥ हंअनु  
यरुट॥ वरखानअकनतय॥ वलनाकनययनम॥ धनमूडाकन॥ तालरु  
यदियवधनं॥ धनअर्घापूजा॥ ॥ लंखरुयनं॥ खवसलंखनलिकागजा  
कथकआयावआसनतय॥ लंखाययआसनायनम॥ लंखमंविनांम  
लंखनहाय २

लावतय॥ लंखनय॥ वाववृणयनम॥ वरखानअकनतय॥ पूजा॥ गंगझ  
येनम॥ यंयमूनायेनम॥ संसवखयेनम॥ तालरुयदियवधनं॥ धनं  
खनसकललिनंहाय॥ धनलंखरुयनं॥ ॥ पूजालुलंखनहाय॥ अय  
वय॥ यं२ वं२ वं२ मूलं२॥ धनमूडा॥ तालरुयदियवधनं॥ ॥ लंख  
॥ धनं॥ खवसलिकागजाकथकआय॥ कखानतय॥ धनतय॥ रुटलं  
खनहाय॥ रुट२ यय॥ हंअवगुणनं॥ वं॥ धनमूडा॥ उंउंवरखानतय



॥ पूजा ॥ ह्रीं ह्रीं नमः ॥ २ ॥ मस्त्यनूदाजभाय ॥ गंधनभाय ॥ यं ३ वं ३ वं ३ ॥ वां वीं वीं  
वे वीं वीं १ बुद्ध्याय विभाविताये लुधादये नमः ॥ ३ ॥ जीं जीं कां कां कूं कूं कूं कूं १ लु  
धादये नमः ॥ २ ॥ अमृतं अमृतं २ स्वाहा ॥ ३ ॥ गं गं गं गं गं गं १ लु कं लु  
यविभाविताये लुधादये नमः ॥ २ ॥ मूलं ३ ॥ यानिमूढा ॥ तालशयदिग्वन्धनं  
॥ धनं तीर्थं गंधनं ॥ ॥ नैव यं गंधनं ॥ जवमयकं यं याव कं नमः  
॥ धनं यं गंधनं ॥ रुट् लं नमः ॥ गंधनं ॥ यं ३ वं ३ वं ३ मूलं ३ ॥ नमः

स्वानतय ॥ वं धनं मूढा ॥ तालशयदिग्वन्धनं ॥ धनं नैव यं गंधनं ॥ ॥ अमृतं  
यावमयनं ॥ लिकाजं यं यं यं यं यं ॥ जीं जीं जीं जीं जीं जीं १ लु कं लु कं लु कं लु कं लु कं लु कं  
नां मलावतय ॥ पूजा ॥ सूर्यमं लु लाय नमः ॥ तीर्थं धनं ॥ लु कं लु कं लु कं लु कं लु कं लु कं  
मं लु लाय नमः ॥ जीं रुट् यं यं यं यं यं ॥ जीं लु कं लु कं लु कं लु कं लु कं लु कं  
वं यं यं ॥ जीं नं रुट् यं यं यं यं ॥ रुट् अमृतं रुट् ॥ वं नमः अमृतं रुट्  
यं ॥ वं नमः अमृतं यं यं यं यं यं ॥ यानिमूढा ॥ तालशयदिग्वन्धनं ॥ धनं



२ अक्षर सिद्ध

अथ यथा गुणं लब्धं न धर्म काय ॥ अत न त य ॥ मूलं आत्मन व न्द न  
नमः ॥ मूलं आत्मन यथ नमः ॥ यत्र मा उ म गुणं लब्धं त य ॥ कां ली रू यो यो पी ली म  
थ वा य डी य टी ल कि म रु ता य प्री या दू कां मू ज या मि न मः ॥ ३ ॥ पुं पुं य म अ  
त मू य ॥ ॥ य व लि य म गु वं त र्थ य म य ॥ गुं प्री गु वं त र्थ य मि न नमः स्था हा ॥  
गुं प्री य व म गु वं त र्थ य मि न मः स्था हा ॥ गुं प्री य वा य व गु वं त र्थ य मि न मः स्था  
हा ॥ ॥ य व लि मि य ॥ वां व दू क ना थ य व लिं गृ ह्ण २ स्था हा ॥ कां कृ य ता ला



नामिया वाय्यादाहासूर्यसाक्षि ॥ वलिनवनागुवाय ॥ वृत्तिवधुथीयूजाविधिः ॥

उग्रवधुयाधन ॥ उग्रउग्रवधुमहादवी ॥ ध्यायद्रुगवतीनिवा ॥ तयवामीक  
मासासाविपूकादि समयरा ॥ धीनवदकल्लासाग ॥ धिनवावावूहासिनी ॥ कि  
नीटीकपुलाकाली ॥ कयूनामणिनायना ॥ वल्लमालाविविधुण ॥ कालमालावव  
मिता ॥ असादगमुजाकाका ॥ दिवावमुद्रहमिता ॥ खड्गवाणीमथावर्क ॥ वडा  
कलववाधनी ॥ उमनीपूलयापुनु ॥ दक्षिणमविनाजित ॥ दृढकीधनूर्गदाप

ध्यायनकर्त्तनी खदाङ्गकी ॥ देवसाकलयागनु ॥ विन्दुरुक्तनुवामक ॥ सि  
हासनसमावूरा ॥ महिषायादवर्जिता ॥ महिषासूत्रनिर्दहीव ॥ सर्वदेववि  
नागनि ॥ गवाधाउण ॥ रुकाव ॥ खदाङ्गउमनीविना ॥ वृद्धवधुयवधुव ॥ वापु  
अवधुनायिका ॥ वधुयवधुवतीयेव ॥ वधुयवधुवतिवधुका ॥ नवमीवापुव  
धुव ॥ मयसुप्रिप्रहादिता ॥ वाचनाराव ॥ कयू ॥ नीलापुकावधुमिका ॥  
यीतावयापुलाङ्गया ॥ आलीधल्लहनिहिता ॥ महीधाययमाणु ॥ मल्लव



प्रहस्रिका॥ लघुवृत्तनयकावा॥ उग्रवपुर्दितः ४३॥ उर्वधालामहादवी  
महातगवतिनमामुत॥ नैऋतयूर्यायाद्रकायूजयामि॥ ॥ वृत्तिधानी॥  
आवाहनादिमूढा॥

उत्तमः ४३॥ उग्रव॥ वरिहृगवत॥ ज्ञानविधिः ॥ वावयुर्गुतिलाकातमिय॥ दूधवाल  
१२ स्वातमिय॥ नासिय॥ ३॥ मंगुथिक्कियमनु४॥ गतीवृक्षमरुयाणि निवविषुग  
तानिवा॥ सूर्यनाममरुयाणि लिखावर्धकनाम्यर्द॥ मूलजयनय ३ म॥ ॥

गणगुनमूलनमस्कन॥ तालगुयदियन्धन॥ यागयामन्यामद्रिकनयार्थ॥ ॥  
धवक्ष्णयकयकवाय॥ लेखमद्रिकागवाय॥ अक्षमूढागसूर्याकिनवा  
मवाहर्त्तार्थवारुनयाय॥ गङ्गादितीर्थवृक्षागत्यतिष्ठतिष्ठ॥ मरुमूढागयाय  
लेखम॥ ह्रज्वगुपुन॥ वधनमूढा॥ मंकल्यलेखजादाव॥ अग्रमकलद्रनि  
तकययूवकस्यदवतापीतयनिर्यस्नानमर्दकनिधु॥ भाउद्रय॥ ॥ मौड॥  
लेखतत्त॥ मूलपीलीमग्धवायुदोषदीगकिमर्दिततययामिनमः ४ स्वाहा॥ ३५



मूलनऊय १०॥ ४४ अमुय रुट् ॥ वमुलं खन दाया ॥ द्रुय धति रु ल ॥ वृत्ति नानं  
वृत्तनतया ॥ ॥ अथ विरुक्ति नानं ॥ नासिया ॥ ३ ॥ गणगुन मूलनम स्था नताल  
दुयदि गन्धनं पाणयाम ॥ न्यास ४ ॥ ॥ विरुक्ति काया वखवला दाती सतया  
वलीखन दाया वजिकाण वाय ॥ ककुय मूला गथाया वगन्धनयाय ॥ दां दीं  
दो दो रु ४ ॥ ३ ॥ माल रुल का वजिय पुनतया ॥ सया जा ता यनम ४ ॥ ३ ॥ ॥  
वामद वायनम ॥ ललाट ४ ॥ अथा नायनम ४ ॥ कपित ॥ तल्यु नू वायनम ४ ॥

नासि ४ ॥ वृत्ति नाना यनम ४ ॥ जवला दात ३ ॥ खवला दात ३ ॥ सदाणि वाय  
नम ४ ॥ सदा म सवय ॥ लादात सिया ॥ दवया तलं खतन ३ ॥ नासिया ॥ वृत्ति विरुक्ति नानं  
१ अथ स ४ ॥ नासिया ३ ॥ गण गन्धन यनम ४ ॥ खवस ॥ गुं गुनू खानम ४ ॥ जवस ॥  
मूलं पीही मप्य वाय दोय दी ग कि सदि ता यनम ४ ॥ दधस ॥ ४४ अमुय रुट् ॥ ना  
ल रुयदि गन्धनं ॥ पाणयाम ॥ ला १० ॥ ला ३४ ॥ ला ३२ ॥ न्यास ४ ॥ ४४ अ  
मुय रुट् ॥ ला अमुका स्या नम ४ ॥ दी त रु नी स्या सादा ॥ रु मय मा स्या वेमट् ॥



